

अथ कभी गा॥ ४८ ॥

॥ नाग गवडा गोत्रि ॥ नात्र माथ ॥

द्वंद्विलसत्रावप्रविलासयिकं ४८ ॥ १ उर्थरुला द्रम धुलनाया ॥
रुगमत्रा॥ ४९ ॥ ॥ अगगनिवासियात्र २ अमिय अमिया नीलंग
लदला २ सरुअ सुन्दप्रिलेयाजिन हंल प्रविस्य नाथ यिअ २ अग
गनिवासियात्र २ उवडयागिलिहं मला २ वजवायादिशालि
गणकाहं नावयिअ अगगनिवासियात्र २ उर्थरुलात्रा वव

अथ

मगयज्ञा

मला. नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 धूम्रपाणिमित्रावांछिता ॥ धूम्रपाणिमित्रावांछिता ॥ धूम्रपाणिमित्रावांछिता ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 किमला ॥ धूम्रपाणिमित्रावांछिता ॥ धूम्रपाणिमित्रावांछिता ॥ ४ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दिव्यमयलसत्रं ॥ ५ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सुन्यानायक कल. रत्नायंभिविकंधनील

[illegible]

मनसः कर्म... कायायतना... मयि... गायत्र्युक्तं... १... चतुर्गुणं...

गोपबन्धन

प्रकृतं स्वतन्त्रं २ तुम्हा... ॥ १ ॥ हकात्र...
वर्ष... का... ॥ २ ॥
ग... ॥ ३ ॥
॥ ४ ॥ ॥ गंग... ॥ ५ ॥
॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥
॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥
॥ १० ॥ ॥ ११ ॥

गोपबन्धन



गोपबन्धन

नन्द... ॥ १ ॥ ॥ २ ॥
॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥
॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥
॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥
॥ ९ ॥ ॥ १० ॥
॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥
॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥
॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥

गोपबन्धन

नीलाशुवालकदसयादि॥ पावदसुदायसनाप्र॥ अमसासकासदयिनसदि॥ नयादकादवकसिदि॥

कयंवाहुनि

॥ ६६ ॥ रुचयदयानलकउधवर्गभादाहिनीरुनवात्राया॥ रावां
कावविवाकैक अतुरुनगगलसंवृयिनी॥ ६७ ॥ यदमयवउय
दगिलंगगवप्रियागावयिरुगवृलिग अतुरुनसिद्धियभा
कयदायली॥ यलमामिथीवउथागिली॥ ॥ ॥
नामकह॥ गात्रवकगात्रा॥ कयंवाहुनिदवीनूवदवयलन
मयनसुलासुनवन्दिगत्रप्रल॥ नरुगवगीयाइकमलमदि

कयंवाहुनि

मधुनसमयवज

मधुनः नरुलवृणहुनकाला॥ हाउंरुचप्रशारुनविहधिरुन
डलघुडलाला॥ यिनि॥ यिलयंहुनयलकना॥ ६८ ॥ मिलसि
दूवकात्रिकर्जनलयन॥ कसुत्रिकयप्ररुनयिगाभात्रा॥ ६९ ॥
कात्रिकयात्रकात्रिमधुमालमालारुधिरु॥ रुचप्रशारुन
यात्रकात्रिक॥ ६९ ॥ रुचयिसत्रकवउवाहुनिदासथीवउ
थागिलीवनदयसाद॥ ९३ ॥ ॥ नागयमंजलि॥ गा

वि

रात्रमधुन

लमाठ॥ मधुलसमयत्रक मधुलसंयुर्लु॥ द्वादशकुचउवापि
यात्र॥ ६ ॥ जानकुचवृष्यशीसम्बत्रथागिणीः श्रीयावद्वना
दवीगात्रुणीगकिनीलात्माखपुनादावृयिनी॥ चानीमात्रवद्व
वांयात्र॥ कायवाचिकगिणिशुवननायानयगियाभुनमृवगात्रुणी
या॥ जागजागिणीभनि समनर्मरात्रमृष्टमभनधीरुनव वा
॥ १४ ॥ ॥ नागनाटक॥ गालइउमाना॥ रात्रमधुलमाउ

मामकिपुना

नमः॥ इत्यादि

मामकीदवी आलिकालिइयिचाययिहवव॥ ६ ॥ नमामि
गीमामकिदवीगिहवननाथा॥ संयुर्लुमृमृनकभुजगनवखाभा॥
॥ ६ ॥ जाकिणीलात्माखपुनादावृयिणीवद्वदवीकीउमिविला
सा॥ ६ ॥ रपिमवटमदाकृणीनवीप्रव्वर रुनयिभृनय
मवजमामकीदासा॥ १५ ॥ ॥ नागरुववि॥ नात्रइउमा
न॥ नमः॥ इत्याकात्रुणववव॥ मरुमिसवडगात्रुणवृणा॥ ननाह

प्रयदान

न नाहं न नाहं न नाहं ॥ धन धन धन धन धन धन धन धन धन धन धन धन ॥
 ॥ ५ ॥ इन्द्राणि नाना धन धन धन धन धन धन धन धन धन धन धन धन ॥ ५ ॥
 साह्यं न नाहं न नाहं न नाहं ॥ साह्यं न नाहं न नाहं न नाहं न नाहं न नाहं ॥ १३ ॥ ५ ॥
 नागमधुमना ॥ नागमधुमना ॥ गिरिकवचन विगमि मधुलमाड ॥ मि
 तिना नन्दमन्त्रि धला ॥ वडवा नाहिनालि म न संवच नानात्र ॥ १४ ॥
 दाहला न नाहं न नाहं न नाहं न नाहं न नाहं न नाहं न नाहं ॥ नीलवर्णु वरु व क य

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः

आगाम्यज षोडशतस्तुतिनीयप्रभध्वनी। इतिगहनप्रभश्रुतिध्व
 लं बुद्धदा १ हस्तजकिनी आलिंगम् ॥ ननाहं हं ननाहं ननाहं ननाहं
 हं हं हं ॥ ददिनगजसुत. वामधनधन. वृत्रयुगवृत्त कयात्रध्वनी
 वज्रघण्टियेनाचनसुन्दरयहसिक्तकारुण्यगात्रा ॥ ६ ॥ यदम
 यवजयदमाध्वरुगवनी. लावनुयलुगियुष्ययदं ॥ रुवनु २ स
 र्ववधनभात्रयसर्वजगत्तुष्टात्र ॥ ६ ॥ विविधमात्रवलवि

रुपाजमानगजदग १ ॥ मकत्रदं किं ननु ॥ ननु यमानरु नवाननायः कन्नाट्यागमिषिकठनील

ध्वनिनागनामध्विसिद्धिवलदायकं ॥ ६ ॥ उत्तम १ रुगयायक
 यंकत्र. आदिवृद्धयप्रभध्वनी ॥ १८ ॥ ॥ नागकक्रादि ॥ नाग
 ३ या ॥ नीलहं कालयहलिंगकित्रा १ २ दुर्द्धयिगलकं गथी रुवज
 प्राया ॥ उगगभाक्रकात्री श्रीनेनात्मादवी ॥ ६ ॥ नीलवर्धुदवी
 कवगिकयालधात्री १ उगगभाक्रकात्री श्रीनेनात्मादवी ॥ ६ ॥
 काधवित्रदिग. आलिंगसमाधि १ वा ३ ग रुजकनाठकध्वनीया

नीलहं काल

रुवज

विनायकः श्रीगणेशाय नमः ॥ लाजा काली विगन्तु ॥ १ ॥ अनामिका मन्त्रावाका मुटुका काली ॥

॥ ६ ॥ रत्नविष्णुमयटमूदा रुत्रणा व्यासवर्मयवदिगनल
गिलमाला ॥ ६ ॥ वक्ता मंदव्यवनाचायन ॥ १ ॥ वाययिचडवा
नलवतुमीप्रमर्दन ॥ ६ ॥ १० ॥ नागवक्त्रादि ॥ नात्रयटकंका
न ॥ अवनिनीदिता वामजोरुनसर्वा स्वस्तिवित्रणा मात्रमंशासा ॥
नागद्वयभाहवन्नित्रया ॥ विरुवननाया अर्धवलीला ॥ ६ ॥
नमामिणीवन्दमहात्रायण ॥ आरमृत्कृदिता ॥ विष्णुनाथविष्णु

व्यापितः वीरविष्णुमहाकोटनाया ॥ आरमृत्कृदिता ॥ अगिनिष
णाहवपवन्ता ॥ ददुक्ताया विष्णुकित्रणा ॥ विष्णुमधवाकंका
लनयना ॥ वेप्रसंज्ञसात्राखरुणात्रणा ॥ माधवमायायुत्रुनव
क्रान्दयिष्णवापोरुत्रणा ॥ समप्रसंमाया नागविभाहा ॥ ध्यान
वनागभादिगदहा ॥ नत्तारुत्रणा ॥ युक्तालिगमीनि ॥ कयुननायन
नृलउनकात्रा ॥ सूत्रनननागा वंदितवत्रणा ॥ नायसूत्रव्यनत्रव

मामाउकेसीमनवरमानः सरलसत्त्वनिवसंप्रजाताः कुलसनामः यथाविशमः मांस्मृतोदकिनपुंजलीय

नवीना॥ २० ॥ ॥नागगुह्यनि॥ नाप्रमा०॥ अमत्रगिदलस
ननालरुविनाजिगा. शिखवनसचलाचत्रचक्रया॥ ६ ॥ अ
किनीवत्रनी. वरुवेवाचनि. श्रीदवीशिसकि शिरुवमाता २ ना
शिमलुलमा ५ रवमन्यवी २ शिनिचकरुदिनिगिनिनयना॥ ६
शिनिगलवययय. शिरुवव्यायिगा. अखयनिलंजनआगिद्रपा
॥ ६ ॥ उगुगिमगुगिवनददिममागाधीवर्जथागिणीयादग

अमत्रगि

पुष्पाकि

नीसगतलो गविरुपलयानसारः साकाग २ यवनवडकमः ३ उगुडलाना यकासा

वृष्ण॥ २१ ॥ ॥नामगन्धामरवि॥ गालजटि॥
उंआः रुंरुटमनेखासा। मनुवि। षडवाचन. पूजायूजिगयूज
मंराव्य. गल्लसुवृयशुवनुवा॥ ६ ॥ खखखादिगअप्रिवप्रिय
जाल्लघघ. घाकय २ विघ्नरुत्रयक्रमियाप्रसं. यकंठंयप्रिय. यं
नमंवल्लिना॥ सर्वजकनाकसंरुगयगयिगावअयसावृन॥ अ
कजाकिणीदयी. अरुममगान. कंदंवल्लिगृद्रुनुवा॥ समयात्र

उंआः २३

बलिपुत्रा

卷之三

卷之四

नाश्याह ३ दवआह न न नाह न न नाह न न हं हं ॥ सवन न वं

नामधरा रामलाल बल...

四

सप्तमः अध्यायः ।

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

जमदियात्रिलक्षणा. सात्रिभयन. वलसूहमयना. कर्षवहन
 दिगन्ध्याना। गगननिवावर्णु. वन्धिप्रदाया। मन्मसलुलरुवनी
 ना। शिषधनखद्वा। गच्छादि। गलसम्बन. पयिसयिगुन्दरुवना
 वा। हसविनाहिन. वज्रवावादी। उक्ताविनदधिश्चन्धना। गावंगि
 लिनावज्यागिणीयात्र॥ समयुत्रवत्र। एन्धवाधिया। समयाग्न
 नन्दरुलि। ग्यनामलुलसम्बलवज्रवावादी॥ ॥ २५ ॥

नमो गौतमिनि॥ मायवकननि॥ वकिं कुंजुल कलिनात्र दमम
 वरुषिगिनिव नयनल मिलमाला २ सनवकि रनेयारुस
 विरुषित गगणभावि वरुलिमाला॥ ५॥ ॥ अमृगसिद्ध
 वदभाद्रकावा ३ गगनाथ श्रीसम्बतनाया २ वरुकाटकावा
 धनिया कलदीलहखदाग २ ससुटथागिलिकमत्रविहासि
 गनसहासखमनियसाद २ वरुकावादिशालिंगणसम्बतना

श्रीगौतम
 नमो

गौतमिनि

वयिवद्विहर्तृग २ वाक्त्रिकात्रयिकिदन्तिद्वन्द्ववर्द्धरुन
 रुलनयसाध २ सरुकावृद्धिनेयागावन्तिकर्तुया दन्ववद्वन
 लयगाद २ दहलशालिंगणद्वन्द्वनीलदधुविनासयिधुन्य ॥
 ॥ ॥ २३ ॥ ॥ गौतमिनि ॥ ॥ गौतमिनि ॥
 ववि॥ गौतमिनि॥ गिलिनायनकुरुवक्रविहाना २ कनहखदि
 धनमंगलकाभ ॥ ५॥ ॥ कामकनेयाकाभनदिवडमाला वा

गौतमिनि

गौतमिनि

का. प्र. वि.

गङ्गासमाह्वयः प्रकृत्यादिया॥ ५॥ वामदक्षिणकथः सप्तविंशति
यावत् २ कालिगवज्जाननप्रश्नः। कृतिकप्रिया॥ ६॥ यद्वाद्यलुदया
यित्रवर्जि २ नविमिषाविययावः। आत्रायवेधत्र॥ ७॥
कर्णुवात्रकः सूर्यनक्षत्राभ २ वायुसंवरुदित्रवियामंत्रा॥ ८॥
॥ २७ ॥ नागकात्रयि॥ नागसूक्तमा०॥ कात्रयित्रिधितुवात्रा २ म
सजिनककात्रा २ द्यनकायिधितुवात्रा २ कनलप्रियाप्रिनला

का. प्र. वि.

ना॥ ५॥ मलयाद्वर्क इन्द्रवाजयिया २ लिंदिवाजयियावज
यिया २ गदिवात्रुस्वाजयिमाध्व २ मयनात्रावयियायिया २ दाल
कालिङ्गलसात्रिजत्र २ इन्द्रवाजयियायिया. यदुसमकसुलिमित्र
कथ्यत्रलावत्रयियायिया २ मानियायिधनसालिङ्गल २ ग
दिमालखाजयियायिया २ थुवनद्वयवर्गः. सङ्कासङ्कनमभियायि
या नीलसङ्कमं सदावयिया २ गदिमजावण. पुनसामिया॥ २८॥



गंगाधर

गंगाधर प्रिय। सातवें भाग ॥ गंगाधर उर्द्ध साधु प्रिया कमल
कालि म श्री वाचा उमरु कर्माणि धनमि गुरु वाम खट्वांग कपो
बल ॥ ६ ॥ श्री गुरुवासा जय वाङ्मनि वृद्धा जन्मना प्रद २ मा
प्रिय प्रजापिया प्रिय माया साधु कर्मा वभा वलिना २ योग प्रवृत्ति
सुदृढा मगना धध प्रिया उनेल मिला माला विग्व कृ प्रिम प्र
इत न मगना मगना प्रवृत्ति मगना २ प्रवृत्ति मगना प्रवृत्ति

गंगाधर

गंगाधर

गंगाधर प्रिय। सातवें भाग ॥ गंगाधर उर्द्ध साधु प्रिया कमल
कालि म श्री वाचा उमरु कर्माणि धनमि गुरु वाम खट्वांग कपो
बल ॥ ६ ॥ श्री गुरुवासा जय वाङ्मनि वृद्धा जन्मना प्रद २ मा
प्रिय प्रजापिया प्रिय माया साधु कर्मा वभा वलिना २ योग प्रवृत्ति
सुदृढा मगना धध प्रिया उनेल मिला माला विग्व कृ प्रिम प्र
इत न मगना मगना प्रवृत्ति मगना २ प्रवृत्ति मगना प्रवृत्ति

गंगाधर

अथ न्यायान

मयि मा ननिनवात्रलद २ जीनयययानिप्रंनंदायूत्रक. जीनज
नदी वजजागिलि २ ऊयं २ दाउआरुननससाग. कननिकघा
नयप्रधात्रि २ ऊयं २ नूदसममनननं. गिप्रिप्रनूदनलमिल
माला २ ऊयं २ नाखदूऊगगसंसात्र. यलमामिश्रद्वयंवाकूनि
ला ॥ १० ॥ **॥ वागलेनवि ॥ वात्रइय ॥ श्रुद्वकूयालदि**
गंविदिगंउवम २ धंसिलमात्रवउवघन २ गगलसयत्रगग

लऊनऊनकाला. गगलदाभाप्रघणुवाजियात्र ॥ दूदूदूतमा
मियक २ गकिनियकेशवकिहानगकिनिसत्रलइगंगा २
पूवदूऊनयकिमदकिणवउत्ररुवन विद्यमालविघनख
लियात्र २ वजगकिनिधात्रननात्रगकिणी. वन्दालगकिणी
वउत्रदवी २ सिंघनिव्यांघिनिऊम्वकडलाकिलि. खद्वंगाय
वगुयागश्रूकूणदला २ गकिनिदीकिलिउरि कवाऊनि

उदितगुरुवन

धालनम्भादवकावदना २ जिनऊननीदवीजाकिनिदुपयि
सत्रल. यक्कमदारुप्रधुषनीया २ खज्जुठकवज्जघष्ठवद्धा
गयाग २ यलमासिदवीशीहानध्वनी ॥ ३१ ॥ ॥ वागः
यमऊलि ॥ सात्रनाठ ॥ उदितगुरुवन. कमनासनकित्रल. ललि
गयटनयावनसागा २ निर्मलकदय. कनूषामयनाथा. ददि
मूरुयवलपुकागा ॥ ६ ॥ उक्तादवशगशगसत्रल २ विउ

वज्जघष्ठ

वनव्याधिगङ्गागडुहानिया २ यनमासिवगमलाकध्वन २ क
नकनगनमलिहानविदुधिया २ कनकसुवगध्वनि ॥ वागः
कयध्वनवदलेआरुव. सलऊआनन्दमन्त्रि २ सत्रनलय
ककिन्नवगधधुडिगा २ ललाटवत्रलभिलंगगध्वनिया २ कि
मिलधात्रखत्रभाऊयकागा २ दर्शनयायइठखरुत्रल २ नक
वधुमखनयनसत्रावना. सर्ववक्रलसंयुधु ॥ नगनध्वनि

उपपन्नं तस्य सप्तहं नानां नो नानां लवपुत्रावसानं कांशदं भयानां तव भिगपि सानां तवादा नाम कवि उदिष्टा

कामन विक्कासिग

कृष्णमालिना केव्वना २ मय मधुल सुवन वा अयि ॥ ३२ ॥
नागनाम केना ॥ नात्र माथा ॥ कनत्र विक्का गिरि म्मि गि दधामन २
वूमलु पिय वलु मम दसा २ वरुन वदन वरुन यदल सन नृ
यय काणिजा ॥ ६ ॥ नमामि श्री श्री मदान नृ श्री सन नृ
ननाय मम गीला २ वूमनि ददन हान वन यद सर्व हान नि
वि सागला २ यथ मकन दय धातिन व अद्य ॥ मूद्रामालिग न

मंरुगी

नमामि २ जिन धाम

नाडिगा २ द्वितीय वृणा धन गृणीय हान ल्क श्व वरुथ खन सन
इव धनी २ मरुय सुअ य वरु वलु धर्म नाय वरुथ वान वृग
यूरुका २ नगन मकाट ठिल य हलिग विस्त्रिख मध्व विवना
२ निव द्वि वृद्धि दायि निमि गरु निगा २ सर्व हान नि विरु वय
दाता २ वरु सन ल सल न मार्गी ग यत्र मा अ अ न्द न्द न्द नि ॥ ३३ ॥
॥ नागनेन वि ॥ नात्र इड मान ॥ नमामि २ जिन धाम वरु

नमामि २

जनवदुचममृगिआत्रं कृता २ ये ३३३ नय के धाउकस्य नूय. व
 छधर्मिआत्रयस्य ना॥ ३३ ॥ ननाहं २ उगक संसाल उधनिगाम
 नाहव. नमास्तु २ ये ३३३ नध्वना॥ नमामि २ श्री गभनिय नध्वन
 मृद्विसिद्धि व दायणी २ इलिकरुन सर्वयाय रुयं कवदान व
 ल्यप्रहृमा कयदा॥ ॥ ३४ ॥ नागडं॥ नमामि २ धर्म धाउ
 वागध्वल धाउठा इवात्रयत्रिमलिमाः धाउठा मात्रल उनड

नकात्रा. सर्वदवयत्रिमलिमा २ नमामि २ वागध्वत्रमलुल य
 द्वागिनिनिवासिना २ सत्वविभू कल इवगिनामन॥ यलमा
 मिजिनवक वनी २ ननाहं ३ नना॥ ३५ ॥ ॥
 नागव सनललिम॥ मात्र इउमान॥ मृद्वयत्रमं ना उडर
 वयु कासिन श्री गभय मनिवल ध्वा नसावत्रना॥ दहिनवज
 याणि. वामकमलयाणि. नमामि श्री धर्म नायमया मत्रि ॥

अथ
 ३

न
 रुम
 ३

सुवर्णश्री

यदिनविमिलिधन. तामकूलिगया. त्रिविधवीवलधउ. उ
वनव्याधिगा॥ ॥यदिनवडायालि. तामकमलयालि. नमा
मिणीधर्मनाथमहामूलि॥ कु ॥ कावलिमानसनिर्मलद
दय. सखडडावनश्रुययदागा॥ कु ॥ उपमरसुगमव
लस्यविम. उक्तासुमत्रलभाकपदागा॥ ३३ ॥ नागहेयवि॥ ना
वडया॥ पूर्ववक्तायणीहंसमानूरा. कलकवदनश्रुदस्यधनि

मोक्ष

नागशंभुनमानशिः

श्रीवेष्टुवीदवीः सपन्नवाहना २ तिष्ठवनकुननी
शंखचक्रहस्ता २ नमामिदवीदुर्धीवर्कत्रयिनी २
विदुयिमहासमभनसमूर्वी॥ कृदतिलसना
महासखयागाः कंदववृकुतनः निवासिनिया॥
तवतयहनलः नाननदुःखा २ तकिपुष्पदः ॥
नरुनसिद्धिम॥ तनयिः सतशुवनदपुष्पादः
मन्दादिददुःखहनवी ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ २ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ३ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ४ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ५ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ६ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ७ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ८ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ ९ ॥
सर्वभूतहितं कुरु ॥ १० ॥

उक्तं मातुलं च वृषवाहना. वलुधवनासि शूत्ररुक्ता ॥ १ ॥
हं हं शूद्रं गमनं नीलवर्णं सदिना. शूद्रं तव गलपगिमसि
मा ॥ शूद्रं सिद्धिं नूनं नृणां कुरु यदायली. स मंत्रनियया पविनासि
मा ॥ यच्छि मन्त्रं दायली हं सवाहना. वृक्षं वदत वज्ररुक्ता २ द
क्षिणवा नासि. घनधानरुक्ता. शूद्रं गलरुक्ता मदिषामनि ॥ ३ ॥
अथ शिष्यं वीक्ष्य मवदत्ता. सिंहवाहनखं गुरुक्ता ॥ शूद्रं कामा

पूर्वदिशि स्तिगदंसा

प्रिययुववाहना. प्रकृताश्रवदनगकिरुता॥ नेअन्यनेकुवी
गत्रुवाहना. स्यामवदनवक्ररुता॥ वायुयवामुं कंकात्र
या. कर्किमं पुवगालमालधवना. अरुवृत्रनागमद्यादिना
यथात्रसरिगदवी. पुनमासिदवीशीगवयादश्वर्वनः सुगु
किमृगुमिजगकात्रदवी॥ ३७ ॥ ॥नागमाला॥मात्रमा०
पूर्वदिशि स्तिगदंसासनीदवी. चन्दवदनीदवीक्षत्रिगशिधून॥

माशुको

नभामिशीरुत्रवमारुकागलयगिक्मात्रा॥ ५७ ॥ अरुत्रवअ
सूयागिजीअलिंगल॥ ॥नाकावदनिसारिग. मयुत्रासनिद
वी॥विन्दूयात्रक्षत्रिवेकुवीदवीश्वदनधोत्रयिनि. वात्रादि
दवीश्वकुमवदनिळ्ळायलिदवीश्वत्रंखजक्षत्रिगकंकात्र
मृत्रुमि॥ पुनमासिदवीशीमदालकीसगल॥ ३८ ॥ ॥
नागहेत्रवि॥ मानयदकात्र॥ पूर्वदिशि स्तिगवक्षायलिदवी

निर्वादिनिर्वादि... पुकं द्या कपु न ग पु म... श्रीमासयमासवनागज॥

दत्री. शिखरवन्तयवित्या॥ ५५ ॥ स्वस्वसूत्रमभादवीनित्रुनद
 वी. शुन्यपायदत्रीशुन्यस्वरावा॥ ५६ ॥ कालमृत्कइयिषा
 लवन्धिया. नागद्वयभादुकनगिनकुन्दिगा॥ ५७ ॥ शुद्धिसंहा
 लद्वी. मातृलिद्वी. भादुमाग्निद्वी. दुष्काययिसंनध्य॥ ५८ ॥
 ॥ नागमाखवा॥ नागमा० ॥ वज्रिधालिधंगानिचष्टुलिनी
 सिद्धिनिद्याधिनिउम्बकडल्लाकिली॥ नमासिधीयागान्वनरुन

आद्यमश्वमेधः।

ध्वजी ॥ विनिर्भयदवीपिठुवनयत्रिस्य ॥ पूर्वद्वडरुत्रयकिमयकि
 लदिगदवी १ अकिलिजीकिलीचडसिकेवाकेनी २ वरुत्रदि
 गउक्का रुलननुदवी १ गिनि २ नयदवी नाकेरुदवी २ रुनि
 रुत्रवक्का ०० न्दसू मत्रवाल. वाउगयागिली समत्रसंराव्य ॥
 ॥ ४९ ॥ ॥ नायाहावा ॥ नात्रमूत्रमा ० ॥ दिरुऊदिमू
 खयिनय ॥ २ मकूटकंभदिगंववा ॥ ॐ ॥ ननाना ३ वाम

ब्रह्मनादि

श्रीमद्भक्तानां

कनाटकद्विदितकत्रिगि॥ हाउआरुवणविरुषिगा २सूर्यमण्ड
लमाडः गात्यवमत्रिगिः नलसिलमातामसोरिगा॥ सनगुन
वजलसिलंगगधप्रिया २वजवात्रादिआलिंगल॥ ४२ ॥
॥ नागनाट ॥ गात्रइर्मान॥ श्रीमद्भक्तानाथवत्रमहावी
नत्रिजया. वजुहासखभुधनिनागवासरुल॥ नमामिश्यी
मंश्यमात्रा॥ ५॥ ॥ जगदिस्वत्रजगगनाथउवनव्याविका॥

मंश्यमाथ

श्रीमद्भक्तानां

॥ ५॥ ॥ यरुकधनागुरुवत्रभागुत्रलायाथीधर्मधुस्वभ
नयालमणुलकका॥ ५॥ ॥ जगगनाथजगदीस्वत्र. नीलज
नलाया. सर्वसाकविसात्रदयलुगनिलश्रुता॥ ४३ ॥
नागकक्रा॥ गात्रइर्मान॥ श्रीमद्भक्तानाथवत्रमहावी
प्रमि २सूर्यमण्डलमालरुषिगंधका॥ ५॥ ॥ गनाना २नमा
मि २थीस्वभुमहाकात्र. द्विदितकत्रिगिधत्रममिगुना २हा

स्वभुमहाकात्र

नक्रवधु नक्रमय

उत्तरा नरुषिगददा॥ कु ॥ सकनमालदयं लसका. सनन
नवदिगरुवरुयरुवला॥ कु ॥ मृद्विसिद्धिवलदायकदव
२यिउवनविवाधीमहाकात्रसत्रण॥ ४४ ॥
नागमालव॥ नात्रमाध॥ नकावधु उका मख विभयं दि
उज २ददिनरुजगजदस. महावलावन॥ कु ॥ नमामिशी
लीमस्यनयप्रभेधनं २वा मउज मूरुय मया धनं यथा निर॥

नक्रवधु नक्रमय

सर्वपुत्रासासवदमनीव॥

मयनि

॥ कु ॥ जगगमं सालवारुल. यसादसिद्धित्वं २जगगमनां
कसिद्धिरुलददिम॥ कु ॥ यकषा लुवसदिन. इयमिसुन्द
लिदवी २मर्थलारुय धुलाय मगन्धन॥ कु ॥ सकयुत्रवत्र
लयसादसिद्धिम २रावां राववत्र (लीमनाउनमामि॥ कु
यमगिनिस्त्रिगवआ रुवा वाय्य ममिगयदवित्रं विगलीमस्त्रि
गि॥ ४५ ॥
॥ नागनामकनि॥ नात्रमाध॥ मयनिजल

नक्रवधु नक्रमय

अग्निवायुमण्डल उयसंस्मिन्धीसुमत्र॥ कु ॥ नमामि २ श्री उ
 न्वजसत्त्व अमकगुणनिधिसागना॥ कु ॥ विध्वनाथविध्वना
 यिगगुप्रयिउवनसंयुक्तिगा २ आत्र ॥ वर्धुमुखनयनसुविमा
 ल. वज्रघण्टाप्रिगा॥ कु ॥ मिलकसुवर्णसुभागास्तत्र. वल
 मकूटसिलगि. तन्त्रवृणुलसिलगित्रीवल. सत्त्वयर्थकसस्मि
 गा॥ कु ॥ वज्रप्रदियादिगा कनलादि. तन्त्रमण्डलसंयुर्ण॥ कु

द्वादशयुमादिकगावयिदिनास. सुवज्रगुननिनऊनसिला॥ कु
 मुद्धिसिद्धिवत्रयदागासुमत्रलजिनरुतनरुवयदागा॥ ४६ ॥
 नागनामकत्रि॥ नात्रमा०॥ श्री कक्यात्रेगिप्रियुवननिवासिग
 श्रीश्रुमिगारुसिलमोतिधल॥ तन्त्रासिथीश्रानन्दादिलाकध्वज
 यिउवनव्यायिगसुसंगला २ मणिमयस्वरितयवर्गककडाध्वज
 नकवर्णकमनासन २ वेगनागसंयुक्तसूत्ररुतनयदाउ

श्रीकक्यात्रे

नानयादिभाके

पुष्पादि

किमगुगिवनसंयदागा २ अत्र नमना हन. वागममिमपुन. वि
द्विविनायकगणध्वनः ॥ ४७ ॥ ॥ नागमधुमना ॥ नाग
इर्जमान ॥ यभादिरुआदिदधरुमिसून्यलिननभेनूमणुल
सनस्तिगनयना २ द्वादशकुजवडवदनसुभावावजवाजा
दिश्रालिंगणा ॥ ॥ रुंरुंरुं रुंरुंरुंरुं दधदिगकुवन. मात्रसज
सम्भाधियात्र ॥ दधश्रालिंगणश्रुदयसंराव्य नांनयिदानसम्भ

सम्भ

ननाया २ कुलिशघणगजवर्मविश्रुषिगा. कनकिउमनूयिधूत्र
धना २ माडूयूत्रिधंगकयात्रखद्रांग. याधयत्रधुवकागिधध
ला २ यक्किनवलसकूटश्रालंरुगषटमूदाश्रुत्रणरुषिगा
२ श्रालि कालिइयिश्रालिरावाययि. व्याधुवर्मनिवधनरुयू
गन २ नलमिलनमालश्रानमणीसम्भप्रदिव्यवडुयिनिव
नूधदयया २ जवम २ मालरुहययिसत्रण. गावंगियनमा